Journal of Socio-Educational & Cultural Research, Vol. 2, No. 4, J-J 2016 ISSN : 2394-2878

वैश्विक शान्ति की स्थापना में धार्मिक शिक्षा की प्रासंगिकता

डॉ0 राजीव मालवीय*

सारांश

धर्म अत्यन्त प्राचीन काल से ही मानव जीवन के शाश्वत मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। धर्म एक प्रकार का आध्यात्मिक चिन्तन है। जिसके माध्यम से मनुष्य आद्य–शक्ति के गूढ़ रहस्यों के बारे में जानने का प्रयास करता है। दुनियाँ के जितने भी धर्म है सभी में वैश्विक शान्ति की स्थापना करने वाले आदर्शों, मूल्यों को महत्व दिया है। सभी धर्म एक ही मत को विविध तरीके से प्रकट एवं व्याख्यायित करते हैं। ऋग्वेद, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण आदि के साथ–साथ बौद्ध धर्म, जैन धर्म, इस्लाम धर्म एवं इसाई धर्म शान्तिमय जीवन यापन के आदर्शों एवं मूल्यों को हृदयगंम करने का अनुपम संदेश देते हैं। वर्तमान समय में जब विश्व में आतंकवाद, कटुता, मूल्यों का पतन, असहिष्णुता, धार्मिक उन्माद चरम सीमा पर है। अशान्ति एवं भय का माहौल विनिर्मित हो रहा है, ऐसी स्थिति में धर्मनिरपेक्षता को अंगीकार करने के वाबजूद देश की शिक्षा–व्यवस्था में धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत सभी धर्मों की मूल्य परक आदेशों, मूल्यों का तुलनात्मक ज्ञान अवश्य विद्यार्थियों को प्रदान किया जाना चाहिए। वैश्विक शान्ति की स्थापना में यह सार्थक कदम होगा।

धर्म अत्यन्त प्राचीन काल से ही मानव जीवन के शाश्वत मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। वाल्मिकी रामायण में कहा गया है कि – ''धर्मो हि परमो लोक''[1]अर्थात् दुनियाँ में धर्म का श्रेष्ठ स्थान है। वही आचार्य वृहस्पति ने कहा है कि – ''धर्मः प्रधानं पुरुषार्थनम्''[2] अर्थात् पुरुषार्थ चतुष्टय में धर्म सर्वश्रेष्ठ है। वास्तव में धर्म शब्द की उत्पत्ति 'धृ' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है –धारण करना''[3] निश्चित रूप से धर्म एक प्रकार का आध्यात्मिक चिन्तन है, जिसके माध्यम से मनुष्य आद्य–शक्ति के गूढ़ रहस्यों के बारे में जानने का प्रयास करता है। प्रायः दुनियाँ के सभी धर्मों का मूल उद्देश्य ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति करके सांसारिक दुःख एवं अज्ञानता का समापन करना तथा मुक्ति की प्राप्ति कराना है।

मानव जाति के उद्गम काल से ही धर्म मानव सभ्यता एवं संस्कृति के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। विश्व की अनेकों प्राचीन संस्कृतियों यथा–बेविलोन, सुमेर, असीरिया, माया, हड़प्पा, मिश्र, चीनी आदि में धर्मों को विशेष महत्व दिया गया। इन्हीं प्राचीन संस्कृतियों से ही यहूदी, पारसी, इसाई, सनातन हिन्दू धर्म, ताओ, शिन्तो, बौद्ध जैन आदि का विकास हुआ। कालान्तर में सातवीं सदी में इस्लाम धर्म को अपनाया गया। वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में भूमण्डलीकरण का दौर चल रहा है। समाज में विज्ञान और तकनीकी को विशेष तवज्जो दी जा रही है। परिणामतः अनेको नवीन आविष्कार एवं विध्वंसक हथियार अस्तित्वशाली हो गये है। मनुष्य भौतिकतावाद की ओर उन्मुख हो रहा है। मानवीय मूल्यों का क्षरण होता जा रहा है। मानव जीवन एवं वैश्विक धरातल पर अशान्ति का साम्राज्य विस्तारित हो रहा है। अशान्ति से दुःखदायी परिस्थितियाँ विनिर्मित हो रही हैं। सम्पूर्ण विश्व बारूद के ढेर पर बैठा है। मानव एवं विश्व का अस्तित्व खतरे में है। ऐसी विषम परिस्थिति में शान्ति की स्थापना एवं मूल्य बोधक परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए शान्ति, धर्म और शिक्षा को मानव जीवन के सहगामी मूल्य के रूप में पुर्नप्रतिष्ठित करने की नितान्त आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध निबन्ध में इसी आवश्यकता को विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक प्रविधियों से विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

धर्म और मानव सभ्यता का विकास सहगामी रूप से हुआ है। विश्व में प्रचलित सभी धर्म अत्यन्त पुरातन काल से ही शान्ति, सद्भाव, सहयोग, सह–अस्तित्व के आदर्श का प्रचार–प्रसार करते आ रहे हैं। प्राचीन भाारतीय हड़प्पा संस्कृति में सनातन भारतीय हिन्दू धर्म का विशिष्ट स्थान था, तभी उस काल में

* एम.डी.पी.जी. कालेज, प्रतापगढ़

पशुपति एवं मातृदेवी जैसे आराध्य देवी–देवताओं की आराधना करके जन–मानस शान्ति मूलक जीवन की ओर अग्रसर होते थे। इन्हीं मान्यताओं को कालान्तर में वैदिक धर्म में विशेष महत्व दिया गया। ऋगवेद में स्पष्ट रूप से कहा गया कि सभी धर्मों की मूल बातें एवं निकष एक ही हैं, जिसे लोग अपने–अपने ढंग से वर्णित करते हैं– ''एकम् सत विप्रा बहुधा वदंति।''[4]

वैदिक साहित्य के अन्य ग्रन्थों जैसे ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद, स्मृति आदि में शान्ति की स्थापना के निमित्त करूणा, सद्भाव, मित्रता, दया परमार्थ जैसे मूल्यों को विशिष्ट महत्व दिया गया। इसमें व्यक्ति को भौतिकतावाद एवं लौकिकतावाद से ऊपर उठकर आध्यात्म में अवगाहन करने तथा जीवन में नैतिकता एवं उत्तम चारित्रिक विशेषताओं को अपनाकर शान्तिमय जीवन जीने की सीख दी गयी है। कालान्तर में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य में विश्व–शान्ति की शिक्षा विद्यमान है। महाभारत में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि–

यदन्यैर्विहिंत नेच्छेदात्मनः कर्म पुरुषः।
न तत् परेषु कुर्वीत जानन्नप्रियमात्मनः।।[5]

अर्थात् धर्म वही है जिससे स्वतः को सुख हो, किन्तु दूसरे को उससे कभी भी कष्ट न हो। महाभारत का ही एक अंश श्रीमद्भगवद्गीता है। वैश्विक शान्ति की स्थापना में गीता में निहित आदर्श एवं मूल्य अत्यन्त उपादेय हैं। गीता में श्रीकृष्ण ने शान्ति के संदर्भ में स्पष्ट कहा है कि– ''जो व्यक्ति सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममतारहित एवं अहंकार रहित होकर अपने मार्ग में आगे बढ़ता है, उसको परमशान्ति की प्राप्ति होती है।

विद्यया कामान्यः सर्वान्पुमां चरति निःस्पृह।
निर्ममो निरंहकारः स शान्तिमधिगच्छति।।[6]

गीता में आगे कहा गया है कि मेरा भक्त मुझे सभी लोकों का ईश्वर तथा सभी प्राणियों का सुहृद अर्थात् सभी प्राणियों के लिए दयालु और प्रेमी मानकर शान्ति की प्राप्ति करता है–

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहे वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिम्च्छति।।[7]

श्रीमद्भगवद्गीता में स्थान–स्थान पर यह शिक्षा दिया गया है कि मानव जाति को दैवी सम्पदा से युक्त व्यक्तियों के निर्दिष्ट छब्बीस मूल्यों को जीवन में उतारकर करणीय कर्तव्यों के द्वारा शान्ति का पथिक बननाा चाहिए।[8] प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता ए.एल. बाशम ने गीता की प्रासंगिकता को निरूपित करते हुए लिखा है कि– ''गुप्त काल से लेकर अद्यपर्यन्त गीता की प्रेरणा का समस्त भारत में व्यापक अनुभव किया जाता रहा है और इसाईयों, मुसलमानों तथा हिन्दूओं ने इसकी सराहना किया है।[9]

वर्तमान समय में मनुष्य अशान्ति से ग्रसित है। वह अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए सतत् संघर्षशील है। मानव जीवन दुःखों से ग्रसित है। बौद्ध धर्म के प्रणेता महात्मा बुद्ध ने धम्मपद में कहा है कि– ''समस्त संसार जब आग में जल रहा है, तब उसे आनन्द मनाने का अवसर कहाँ है ? अर्थात् जब सर्वत्र दुःख, अशान्ति से मानवता कराह रही है तो शान्ति की स्थापना के लिए मानव दुःखमुक्ति आवश्यक है। इसके लिए मनुष्य को अष्टांगिक मार्ग का अनुपालन करना चाहिए। सातवीं सदी में विकसित इस्लाम धर्म भी शान्ति का उपासक है। पवित्र ग्रन्थ कुरान शरीफ (2/2/3 व 21/92) में कहा गया है कि– ''सभी इंसान एक कौम के हैं, लेकिन लोगों ने अलग–अलग होकर अपने–अपने वाँड़े बना लिये हैं, पर जाना है सभी को एक ही प्रभु के पास।'' इस्लाम धर्म में नैतिक आचरण करने हेतु मनुष्यों को प्रेरित करते हुए शिक्षा दिया गया है कि– ''जो लोग गुस्सा पी जाते हैं, और लोगों को माफ कर देते हैं, अल्लाह ऐसी नेकी करने वालों को प्यार करता है (कुरान 3/114) कुरान (3/44) में कहा गया है कि– ''जो मनुष्य नेक अमल करेगा, वही राह सवारेगा''। इस्लाम धर्म में हिंसा और अशान्ति की निन्दा करते हुए कहा गया है कि– ''जो जमीन में फ़साद फैलाते हैं, इनका हिस्सा लानत ही है और

उनका नसीबा बुरा घर (जहन्नम) है।[10] अतः स्पष्ट है कि इस्लाम धर्म की शिक्षाएँ मानव एकता, एवं मानवीय गरिमा की पोषक है। यह मानव जाति को दया, प्रेम, सहयोग, क्षमा, करुणा जैसे मानवीय मूल्यों के अनुकूल आचरण एवं व्यवहार करने की प्रेरणा देकर शान्ति की स्थापना को प्रमुखता देता है।

जहाँ तक इसाई धर्म की बात है तो इस धर्म का उदय ही मानव–यातनाओं के रक्षार्थ एवं शान्ति की प्रातिष्ठा के लिए हुआ है। इसाई धर्म मानव जाति को अपने ह्रदय को मेमने की तरह स्वच्छ और धवल बनाने की शिक्षा प्रदान करता है। यशायह (35/3–5) में कहा गया है कि– ''जिस प्रकार बलि का पशु पाप वहन करके यजमान को उसके पापों से छुटकारा दिला देता है, उसी प्रकार मसीह भी अपनी बलि देकर समस्त मानव जाति को उसके आदि पापों से विमुक्त कर दिया।''

बाइविल में कहा गया है कि– ''जहाँ तक तुमसे बन पड़े सबके साथ यथासम्भव शान्तिपूर्वक रहो।''[11]''तुम्हे हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति मिले।''[12] इस प्रकार यह प्रतिध्वनित होता है कि इसाई धर्म में भी शान्ति की प्रतिष्ठा करते हुए मानव जाति को शान्ति के आत्मसातीकरण पर बल दिया गया है।

वर्तमान समय में धर्म के नाम पर वैश्विक स्तर पर संकीर्ण धार्मिक कट्टरता, असहिष्णुता, मजहवी अशान्ति, अपवित्रता जैसी घृणित प्रवृत्तियाँ पनप रही हैं। वैश्विक स्तर पर यह एक चिन्ता का विषय है। हिन्दुस्तान हिन्दी दैनिक समाचार पत्र में इस स्थिति पर कहा गया है कि– ''धार्मिक संकीर्णता के कारण कई हिन्दू मंदिरों को अपवित्र किया जा रहा है और हिन्दू लड़कियों के जबरन धर्म बदलने के मामले सामने आ रहे हैं। दूसरी तरफ बी0एच0पी0 और हिन्दू जागरण मंच जैसे संगठन मुसलमानों और ईसाइयों को घर वापसी के नाम पर हिन्दू बनाने का अभियान छेड़े हुए हैं। भारत को अपने सहिष्णु एवं शान्तिप्रिय छवि के लिए विश्वगुरू के रूप में देखा जाता रहा है। भारत जैसे स्थापित सहिष्णु देश के लिए देश में धर्म के नाम पर असहिष्णुता, धार्मिक परिवर्तन आदि भारत के हित में नही है।[13] वास्तव में सर्व धर्म समभाव एवं सभी धर्मों को बराबरी का सम्मान एवं संरक्षण दिया जाना चाहिए इससे न सिर्फ भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व में शान्ति का सुखद माहौल बनाने में सहायता मिलेगी। शिक्षा व्यवस्था को धर्मनिरपेक्ष स्वरूप भले ही दिया गया है, किन्तु विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा एवं शान्ति की स्थापना करने में सर्वधर्म समभाव से युक्त सभी धर्मों की मूलभूत बातों को पाठ्यचर्या में अवश्यक स्थान दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष–

विश्व के समस्त धर्मों में निहित शान्ति विषयक विविध अवतरणों से यह स्पष्ट होता है कि लगभग सभी धर्मों का मूल मंतव्य शान्ति एवं सद्भाव की मानव जीवन में प्रतिष्ठा करना है। विविध धार्मिक ग्रन्थों की प्रासंगिकता इसी कारण आज भी जीवन्त बना हुआ है। इन ग्रन्थों में मानवीय मूल्यों, आदर्शों करुणा, प्रेम, सद्भाव, परमार्थ, सह–अस्तित्व, मित्रता, दया आदि को प्रोत्साहित करके वैश्विक शान्ति के लिए एक सुदृढ़ पृष्ठभूमि एवं बुनियाद विनिर्मित करना है। इसी कारण भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद राधाकृष्णन आयोग (1949), कोठारी आयोग (1966), श्रीप्रकाश समिति (1970), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), आदि में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों से विद्यार्थियों को अभिसिंचित करने के लिए सभी धर्मों की मूलभूत मूल्यों का परिज्ञान करने की अनुशंसा की गयी। सभी धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन पाठ्यचर्चा का अभिन्न अंग बनाने की संस्तुति की गयी। अतः वर्तमान परिवेश एवं वैश्विक अशान्ति को दृष्टिगत रखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि वैश्विक शान्ति की स्थापना के लिए धार्मिक शिक्षा को धर्मनिरपेक्षता वादी दृष्टिकोण से विद्यार्थियों को अवश्य प्रदान किया जाय। धार्मिक शिक्षा अत्यन्त प्राचीन काल से ही मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। मूल्यों की प्रतिष्ठा, वैश्विक शान्ति की प्रतिष्ठा, मानवता की प्रतिष्ठा के लिए धार्मिक शिक्षा की प्रासंगिकता आज भी है।

संदर्भ :

1. वाल्मीकी रामायण 2–21–41
2. वृहस्पति स्मृति 2–55
3. काणे पी.वी.; हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र पृष्ठ 1–4
4. ऋगवेद, 1–164–46
5. महाभारत अनुशासन पर्व 265
6. श्रीमद्भगवद्गीता, 2–71
7. श्रीमद्भगवद्गीता, 5–29
8. श्रीमद्भगवद्गीता, 16–1 से 4
9. वाशम, ए.एल.; अद्भुत भारत; शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा; 1997 पृष्ठ 248
10. कुरान मजीद (हिन्दी संस्करण) सूरतुर्रअदि पारह 13 आयत 25
11. दि न्यू टेस्टामेण्ट पृष्ठ 243
12. वही पृष्ठ 270
13. हिन्दुस्तान हिन्दी दैनिक समाचार पत्र : 2 फरवरी 2015 : पृष्ठ 10